धर्म और शिक्षा का अनैतिक घालमेल हो खत्म

जीवन में आस्था का होना बहुत जरूरी है। आस्था से जीवन में विश्वास आता है। वह विश्वास हमें जीवन की कठिन परिस्थितियों से लड़ने में साहस देता है। आस्था और विश्वास से ही यह माना जाता है कि अल्लाह है जो हमारे जीवन को चला रहा है। वही सब कुछ करने वाला है। यह खुद में आत्मविश्वास आने जैसा है। अगर आस्था नहीं तो जीवन में आत्मविश्वास भी नहीं। इसलिए मनुष्य में इसका होना जरूरी है, लेकिन इसका भी एक दायरा और एक प्रकृति है। यह आध्यात्मिक अनुभूति है। दायरा यह कि आस्था खुद के अस्तित्व तक है। इसे दूसरों पर थोपा नहीं जा सकता है। जैसे ही इसे दूसरे पर थोपने का प्रयास होता है, यह आस्था जोर जबरदस्ती वाली और हिंसक हो जाती है। इसके बाद यह बुराई बन जाती है।

इसी तरह जहां जाकर आस्था को लेकर खुली सोच बंद होने लगे, तर्क और आधार की कमी हो जाए, वहां अंधविश्वास जन्म लेता है। धर्म में अंधविश्वास और अंधभक्ति का आना नया नहीं है। अशिक्षा के कारण यह अब भी है। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षा को सर्वव्यापी और आधुनिक बनाया जाए। इसके अलावा कोई दूसरा माध्यम भी नहीं है। आप जोर जबरदस्ती और डंडे मारकर किसी की सोच पर रोक नहीं लगा सकते हैं। संविधान हमें इसकी इजाजत नहीं देता है।

जब तक हर शख्स तक गुणवत्तायुक्त औपचारिक शिक्षा नहीं पहुंचेगी, तब तक ये बुराइयां रहेंगी। हर पीढ़ी तक शिक्षा पहुंचनी चाहिए। जरूरी है कि आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ इसमें आमूलचूल परिवर्तन भी लाया जाए। आज वैज्ञानिकता और तर्कों पर आधारित शिक्षा की बहुत जरूरत है।

विकसित देशों में भी पहले अंधविश्वास अधिक था, वहां भी इस तरह की घटनाएं होती रहती थीं, लेकिन विज्ञान आधारित शिक्षा के माध्यम से उन्होंने इससे पार पा लिया है। विज्ञान आधारित शिक्षा तर्क करने और सोचने का एक ठोस धरातल मुहैया कराती है। इससे अंधविश्वास में कमी आती है, लेकिन अपने यहां इस तरह की शिक्षा पर कभी ध्यान ही नहीं दिया गया, बल्कि शिक्षा का राजनीतिकरण और धार्मिकीकरण

धर्म में अंधविश्वास और अंधभक्ति का आना नया नहीं है। अशिक्षा के कारण यह अब भी है। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षा को सर्वव्यापी और आधुनिक बनाया जाए।

मौलाना वहीदुद्दीन खान

आध्यात्मिक विद्वान व संस्थापक अंतरराष्ट्रीय सेंटर फॉर पीस एंड स्पिरिचुअलिटी

ज्यादा हुआ है। यह अब भी जारी है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में मुस्लिम शब्द का जुड़ा होना इसकी बानगी भर है। इसलिए शिक्षा तो मिल गई है, लेकिन सोच और माहौल में ज्यादा फर्क नहीं आया है।

हकीकत में अगर अंधविश्वास और कट्टरता को दूर करना है तो शिक्षा में धर्म के घालमेल पर तत्काल रोक लगानी होगी। औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा का खाका तैयार करना होगा। स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों की शिक्षा को औपचारिक तो बाकी धार्मिक शिक्षा का अनौपचारिक शिक्षा के तहत अलग से इंतजाम करना होगा। इससे छात्र भी दोनों के बीच अंतर करने के साथ एक-दूसरे की कसौटी पर दोनों को परखने की भी कोशिश करेंगे। कुछ धर्मों ने भी शिक्षा और धर्म के बीच के अंतर को समझा है और खुद ही इससे एक निश्चित दूरी बनाकर रखी है। दुख की बात यह है कि आजादी के बाद से कमोबेश सभी सरकारों ने तुष्टिकरण की सियासत को अपनाया और इसमें अपने हित तलाशते हुए धार्मिक आडंबरों को बढ़ने दिया। मजहब के नाम पर वोट मांगना और उसके दम पर सरकार बनाना सबसे आसान खेल हो गया है। निहायत निजी मामले धर्म को समाज से जोड़ दिया गया, इसलिए आज देश के मुसलमान राजनीतिक दलों के सामने खुद के समाज के मुद्दों को उठाते हैं और उसके आधार पर मतदान करते हैं। अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक जैसे बंटवारे ने भी अंधविश्वास को बढ़ाने का काम किया है। धर्म आधारित इस पहचान के कारण लोगों की धर्म पर निर्भरता बढ़ गई है। लोकतांत्रिक देश भारत में ऐसा नहीं होना चाहिए था, जैसे कि जर्मनी व फ्रांस जैसे देशों में अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक जैसी अवधारणा नहीं है।

(नेमिष हेमंत से बातचीत आधारित)